E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

कण्व का चरित्र-चित्रण

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में जिन तीन ऋषियों का चित्रण हुआ है वे हैं- कण्व, दुर्वासा तथा मारीच। इन तीनों का अपना पृथक् व्यक्तित्व है। महर्षि कण्व की भूमिका सर्वाधिक महनीय है। यद्यपि महर्षि कण्व की उपस्थिति केवल चतुर्थ अंक में ही दृष्टिगोचर होती है पर प्रथम द्वितीय एवं तृतीय अंक में तापसकुमारों तथा ऋषि कन्याओं तथा सप्तम अंक में मारीच आदि के द्वारा उनके विषय में कही गयी बातों से उनके व्यक्तित्व का आकलन हो जाता है।

१. कुलपति- महर्षि कण्व आश्रम के कुलपति हैं। कुलपति वह होता है जो दस सहस्र मुनियों का अन्नदानादि से पोषण करते हुए अध्यापन करता है-

"मुनीनां दशसाहस्रं योऽन्नदानादिपोषणात्।

अध्यापयति विप्रर्षिरसो कुलपतिः स्मृतः"।।

उनके आश्रम (गुरुकुल) में अनेक शिष्य-शिष्यायें विद्याध्ययन में लीन हैं ।

२. त्रिकालज्ञ नैष्ठिक ब्रह्मचारी- कश्यप गोत्र में उत्पन्न होने के कारण उनका दूसरा नाम काश्यप है। वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं- **"भगवान् काश्यपः शाश्वते ब्रह्मणि स्थितः- इति"**। अपनी अलौकिक तपस्या के प्रभाव से वे भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीनों का ज्ञान कर लेते हैं। तपःपूत मारीच भी उनके तपः प्रभाव के प्रशंसक हैं- **"तपः प्रभावात् प्रत्यक्षं सर्वमेव तत्र भवतः"**। शकुन्तला की भावी विपत्ति का आभास उन्हें पहले ही हो गया था। इसीलिये वह उसके शमन हेतु सोमतीर्थ चले जाते हैं- **"दैवं प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थ गतः"**। वहाँ से लौटने पर शकुन्तला के गान्धर्व विवाह का वृत्तान्त भी उन्हें अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी द्वारा ज्ञात हो जाता है।

३. आध्यात्मिक प्रभावशाली- आश्रम का वातावरण महर्षि कण्व की तपस्या के प्रभाव से सुतरां प्रभावित है। मनुष्यों की तो बात ही क्या राक्षस भी उनके भय से यज्ञादि कर्मों में विघ्न नहीं पहुँचाते। उनकी अनुपस्थिति में ही वे विघ्न डालने का साहस करते हैं। उनके तपःप्रभाव का आकलन इसी से किया जा सकता है कि शकुन्तला की विदाई के समय तपोवन के वृक्ष भी माङ्गलिक रेशमी वस्त्र तथा आभूषण आदि प्रदान कर अपने को कृतार्थं समझते हैं–**"क्षोमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्"**। जब प्रियंवदा इस बात से चिन्तित होती है कि उसकी सखी शकुन्तला के रूप के अनुरूप आश्रम-सुलभ अलङ्कार नहीं है तभी दो ऋषि कुमार अलङ्कार आदि लेकर उपस्थित होते हैं। सभी सखियाँ उन्हें देखकर आश्चर्यचकित हो जाती हैं। गौतमी के कहने पर नारद नामक ऋषिकुमार कहता है कि यह सब तात काश्यप प्रभाव से ही सम्भव हो सका है- **"तात काश्यपप्रभावात्"**। इस प्रकार महर्षि कण्व के व्यक्तित्व में तपस्याजनित अतिमानवीय तत्व की उपस्थिति सभी को आश्चर्य चकित कर देती है।

४. लोकाचारज्ञाता- कण्व के व्यक्तित्व का दूसरा पक्ष विशेष रूप से विचारणीय एवं अभिनन्दनीय है। उनका सारा जीवन आश्रम में ही व्यतीत होता है पर उन्हें लौकिक व्यवहार एवं आचार का अनुभवपूर्ण ज्ञान है। उनके शास्त्रीय ज्ञान की परिणति क्रिया (व्यवहार) में हुई है। वे स्वयं अपने को लोकाचार का ज्ञाता बतलाते हैं- **"वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञावयम्"**। चतुर्थ अङ्क में अपनी धर्मपुत्री शकुन्तला को दिया गया उनका उपदेश परिणय सूत्र में बँधने वाली सभी कुल-वधुओं के लिये सर्वथा ग्राह्य एवं हितकर है- **"शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रियसखीवृत्ति सपत्नीजने.....कुलस्याधयः"**।

शार्ङ्गरव के माध्यम से दुष्यन्त के लिये जो वह सन्देश देते हैं उसमें भी उनके लौकिक ज्ञान की सूझ-बूझ पदे पदे परिलक्षित होती है- **"अस्मान् साधु विचिन्त्य..... वाच्यं वधूवन्धुभिः"**।

उनकी अनुपस्थिति में गान्धर्व विवाह के वृत्तान्त से सबसे अधिक भय अनसूया और प्रियंवदा को इसलिये था कि पिता कण्व उस वृत्तान्त को सुनकर न जाने क्या कहेंगे- **"तात इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति"**। पर ज्यों ही उन्हें अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी से उक्त वृत्तान्त का ज्ञान हो जाता है त्यों ही वे शकुन्तला के पास जाकर अपना आशीर्वचन देते हैं और विवाह

का अनुमोदन कर देते हैं- **"तावदेनां छज्जावनतमुखीं परिष्वज्य तातकाश्यपेनैवमभिनन्दितम्। दिष्ट्या धूमाकुलित दृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता"**।। एक अप्सरा मेनका और महर्षि विश्वामित्र के संयोग से उत्पन्न अपनी धर्मपुत्रि के लिये वह दुष्यन्त से अधिक योग्य वर क्या पा सकते थे? अतः अपनी पुत्री से उनका यह कथन – **"सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवा शोचनीयासि संवृत्ता"**- उनके व्यावहारिक ज्ञान में चार-चांद लगा देता है। शकुन्तला द्वारा की गयी भूल को दृष्टिगत कर वह उसके चाहने पर भी युवती अनसूया एवं प्रियंवदा को उसके साथ नहीं भेजते- **"वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम्"**।

५. वात्सल्यपूर्ण आदर्श पिता- कण्व यद्यपि नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं पर वे एक आदर्श पिता की भूमिका का निर्वाह उसी निष्ठा से करते हैं जिस निष्ठा से गृहस्थ पिता। अनसूया, प्रियंवदा एवं शकुन्तला तीनों उन्हें पिता कह कर पुकारती हैं। वे वीतरागी तपस्वी हैं और लौकिक व्यवहारों के बन्धन से उनके तपोऽनुष्ठान में बाधा पड़ती है- **"वत्से, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्"**। परन्तु लौकिक स्नेह-बन्धन से वे अपने को मुक्त नहीं कर पाते। शकुन्तला उनकी धर्मपुत्री है पर उसके प्रति उनका पुत्री का सा स्नेह है। वह उनके लिये प्राणों से भी प्रिय है।

शकुन्तला की विदाई के समय पुत्री-वियोग से व्यथित उनकी मनोव्यथा किसको व्यथित नहीं कर देती? – **"यास्यत्यद्य शकुन्तलेति..... विश्लेषदुःखैर्नवैः"**।

तपश्चर्या-पीड़ित अपने वियोग विधुर पिता की करुणामयी दशा को देखकर शकुन्तला से भी नहीं रहा जाता और जब वह उन्हें अपने लिये शोक न करने के लिये कहती है- **"(भूयः पितरमाश्लिष्य) तपश्चरणपीडितं तातशरीरम्। तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व"**। तब तो उनकी वेदना और भी वाचाल हो जाती है और लम्बी साँस लेकर वे कहते हैं कि "बेटी, तेरे द्वारा पहले पूजा के रूप में डाले गये और अब कुटी के द्वार पर उगे हुए नीवार के उपहार को देखकर मेरा शोक भला कैसे शान्त हो सकेगा"?-

"शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम्।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः"।।

तनया-वियोग से व्यथित पिता की यह कातरता धीरता को भी अधीर बना देती है। शकुन्तला को विदा देकर लौटते समय अनसूया और प्रियंवदा से **"गतवती वां सहचारिणी"**- इस कथन द्वारा वे अपनी आन्तरिक व्यथा को ही प्रकट करते हैं।

महर्षि स्नेहकातर होते हुए भी एक पिता के कर्तव्य एवं दायित्व को अच्छी प्रकार समझते हैं। **"कन्या पितृत्वं खलु नाम कष्टम्"**- इस उक्ति के अनुसार वे कन्या को परकीय धन मानते हैं और परायी थाती को वास्तविक स्वामी के हाथों में सौंप कर निश्चिन्तता का अनुभव करते हैं-

"अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा"।।

इस प्रकार शाकुन्तल में एक ओर जहाँ वीतरागी महर्षि कण्व का तपःव्रत एवं निर्विकार स्वरूप अंकित है वहीं दूसरी ओर उनका लौकिक व्यवहारज्ञान-समन्वित आदर्श एवं स्नेहमय पिता का रूप चित्रित है।